International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 84-86
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 18-05-2026
Accepted: 06-06-2026
Publish : 08-06-2026

अनीता पुनेडा
शोध छात्रा,
लक्ष्मण सिंह महर परिसर,
पिथौरागढ़।

Correspondence:
अनीता पुनेडा
शोध छात्रा,
लक्ष्मण सिंह महर परिसर,
पिथौरागढ़।

पाताल भुवनेश्वर स्थित चामुंडा एवं शिव मंदिर

अनीता पुनेडा

प्रस्तावना-

प्रत्येक संस्कृति का मूल आधार उसके देवता होते हैं। इन देवताओं को मंदिरों में मूर्तियों, लिंगों या पत्थरों में देवत्व आकार देकर पूजा जाता है। लेकिन प्राचीन हड़प्पा और वैदिक काल में मंदिरों का कोई प्रमाण नहीं मिलता,[1] जो प्रकृति पूजा के प्राधान्य को दर्शाता है। हिमालयी क्षेत्र प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध रहा है। यह देवी-देवताओं तथा ऋषि-मुनियों के आस्था का केन्द्र था, जहाँ विश्राम स्थल और समाधियाँ[2] तथा देव मूर्तियों के लिए थान अथवा मंदिर बनाये गये। ऐतिहासिक काल में विभिन्न जातियों के आवागमन से यहाँ अनेक संस्कृतियाँ और धार्मिक स्थल विकसित हुए, जिन्हें प्राचीन ग्रन्थों में देवालय, देवगृह, देवागार, देवकुल, देवायतन, देवाल, द्योल, देवस्थान आदि नाम दिया गया है, जिनसे देवताओं के निवास स्थान का बोध होता है।[3] धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पत्थरों के साथ-साथ इष्टिकाओं का भी उपयोग किया जाने लगा। गुप्तकाल से उत्तराखण्ड में वास्तु आधारित आयताकार एवं वर्गाकार मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ। यहाँ मंदिरों का अस्तित्व के प्रमाण पाँचवीं शताब्दी से मिलते हैं, जहाँ अधिकांश मंदिर पत्थरों एवं इष्टिकाओं से निर्मित थे।

ऐसा माना जाता है कि मंदिर स्थापत्य कला के लिए पाषाण से बने मंदिरों के निर्माण से पूर्व लकड़ी का प्रयोग किया जाता होगा क्योंकि इसका एकमात्र सुरक्षित प्रमाण उत्तरकाशी है जहाँ से आज भी काष्ठ युक्त मंदिर प्राप्त होते हैं।[4] पिथौरागढ़ की विषम भौगोलिक परिस्थिति में भी कुणिन्द,[5] कत्यूरी, चन्द, मल्ल, बम एव रजवारों ने स्थानीय तौर पर शासन किया। जिन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं संस्कृति में अपनी अमिट छाप छोड़ी। ऐसे भौगोलिक विषमता वाले स्थानों पर मंदिर बनाकर और उनमें विशाल मूर्तियों को स्थापित करके अपने अमिट साहस को प्रस्तुत किया। आधुनिक उपकरणों एवं मशीनरी के अभाव में भी मंदिरों एवं भवनों पर लकड़ी की महीन कारीगरी करना भी उस समय के कलाकारों की कल्पना शक्ति के विस्तार का उदाहरण प्रस्तुत करती है। इनकी स्थिति एवं बनावट को देखकर ऐसा लगता है मानो कलाकार के हाथों एवं बुद्धि में स्वयं देवता विश्वकर्मा विराजमान हो गये हों।

चामुण्डा या चन्द्रिका मंदिर, पाताल भुवनेश्वर, गंगोलीहाट[6]

पिथौरागढ़ जनपद के बेरीनाग विकासखण्ड में गुप्तड़ी नामक स्थान से 10 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में पाताल भुवनेश्वर गाँव के बीच में लगभग 10वीं से 12वीं शताब्दी का प्रसिद्ध चामुण्डा मंदिर स्थित है। चामुण्डा मंदिर का निर्माण वल्लभी शैली में किया गया है। इस मंदिर की तलछन्द विशेषता के अन्तर्गत सादा आयताकार गर्भगृह एवं उसके सामने आयताकार अंतराल का प्रावधान किया गया है। आयताकार गर्भगृह की आंतरिक माप 5 फीट 4" × 4 फीट 10" तथा बाहरी माप 8 फीट 7" × 6 फीट 10" है। आयताकार सादे गर्भगृह में चामुण्डा माता एवं महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति के साथ-साथ अनेक खण्डित प्रतिमाऐं भी स्थापित की गयी हैं। इस मंदिर के सामने अन्तराल तथा एक गूढ़ खुला मण्डप है, जो चार स्तम्भों पर निर्मित किया गया है। मंदिर का प्रवेश द्वार सादा बनाया गया है, जो उत्तराभिमुख है।

मंदिर की उर्ध्वछन्द विशेषता के अन्तर्गत खुर, कुम्भ तथा गढ़न युक्त कलश से निर्मित सादी पट्टी युक्त वेदीबन्ध एवं सादे जंघा भाग का निर्माण किया गया है। तीन ओर से उभार लिये हुए जंघा भाग को त्रिरथ जंघा भाग कहा जाता है। जंघा के मध्य भाग के उभार में एक-एक सादी रथिका के ऊपर चैत्य गवाक्ष का तिकोना अलंकरण किया गया है। जंघा के ऊपरी भाग की पट्टी के बाद अनेक क्षैतिज पट्टियों से निर्मित तीन उभार युक्त कोनों वाला रेखा शिखर का निर्माण किया गया है, जिसके ऊपर स्कन्धवेदी में शिखर को हाथी के पीठ के समान निर्मित किया गया है। स्कन्धवेदी और शिखर के बीच में रिक्त स्थान बना हुआ है। मंदिर के शिखर के ऊपरी भाग में ग्रीवा बनाई गई है, जिसके ऊपर चन्द्रिका, आमलसरिका और देवदार की लकड़ी युक्त छत्र-बिजौरा का निर्माण किया गया है। इस बिजौरे पर नक्काशी करके इसकी सुन्दरता को बढ़ाया गया है।

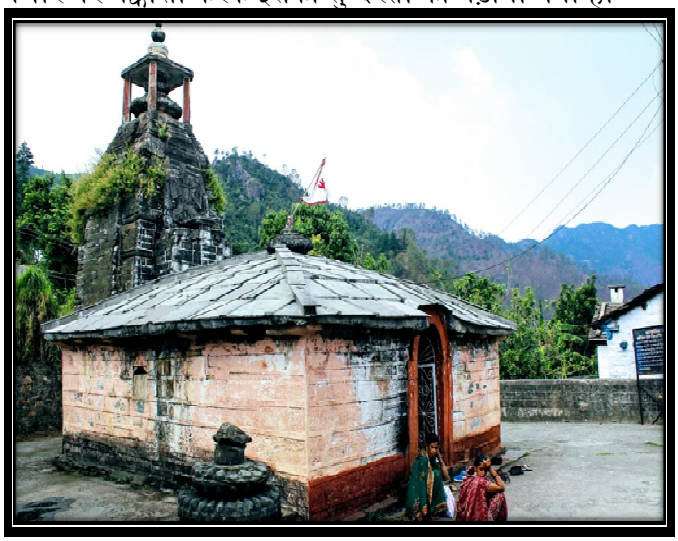

छाया चित्र संख्या 01 - चामुण्डा मंदिर, गंगोलीहाट

शिव मंदिर, पाताल भुवनेश्वर, गंगोलीहाट[7]

पाताल भुवनेश्वर के चामुण्डा या चन्द्रिका मंदिर के समीप ही शिव का प्राचीन मंदिर भी स्थित है। यह स्थान गुप्तड़ी नामक स्थान से लगभग 10 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। यहाँ स्थित शिव मंदिर का निर्माण नागर शैली में किया गया है। इस मंदिर से लगभग 200 मीटर दूर प्रसिद्ध पाताल भुवनेश्वर गुफा स्थित है, जो पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

शिव मंदिर की तलछन्द विशेषता के अन्तर्गत सादा वर्गाकार गर्भगृह तथा सादे आयताकार कपिली या अंतराल का प्रावधान किया गया है। सादे वर्गाकार गर्भगृह की आंतरिक माप की लंबाई और चौड़ाई 4 फीट 4" तथा बाहरी माप की लंबाई और चौड़ाई 5 फीट 11" × 6 फीट 10" है। मंदिर के गर्भगृह में द्विमुखी शिव की ललितासन में बैठी योगमुद्रा प्रतिमा को स्थापित किया गया है। इस मंदिर का प्रवेश द्वार उत्तराभिमुख है जिसे सादा बनाया गया है। कपिली या अंतराल के सामने एक सादे मण्डप का निर्माण किया गया है, जिसमें दो बड़ी-बड़ी प्रस्तर से निर्मित द्वारपालों की प्रतिमाऐं रखी गई हैं।

शिव मंदिर की ऊर्ध्वछन्द विशेषता के अन्तर्गत खुर, कुम्भ, कलश पर निर्मित चार सादी पट्टियों से अलंकृत वेदीबन्ध एवं सादे जंघा भाग का निर्माण किया गया है। जंघा के ऊपर बना त्रिरथ रेखा शिखर तीन कोने युक्त, नागर शैली में निर्मित किया गया है। इस शिखर के ऊपरी भाग में ग्रीवा का निर्माण किया गया है, जिसके ऊपर आमलक बनाया गया है।

पाताल भुवनेश्वर के शिव मंदिर के साथ ही तीन अन्य छोटे-छोटे मंदिरों का निर्माण किया गया है। सम्पूर्ण मंदिर में छोटी-बड़ी मूर्तियों को मिलाकर लगभग 29 मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। मंदिर के प्रांगण में पाषाण स्तम्भ एवं मंदिर के प्रवेश द्वार की चौखट के ऊपरी भारपट्ट में देवनागरी लिपि में लेख लिखे गये हैं।

इस मंदिर के गर्भगृह में निम्नलिखित मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं -

द्विभुजी शिव प्रतिमा

शिव मंदिर के गर्भगृह में स्थापित मुख्य प्रतिमा की लंबाई और चौड़ाई की माप 9" × 1 फीट 2.50" है, जिनको जटाजूट धारी, गले में कण्ठाहार, बाजूबन्ध एवं उदबन्ध धारण किये हुए दर्शाया गया है। द्विभुजी शिव प्रतिमा आसन में बैठे हुए योगमुद्रा में तल्लीन है।

संयुक्त उमा-महेश प्रतिमा

उमा-महेश की पूर्ण विकसित पद्म पर ललितासन में विराजमान शिव की अर्द्धांश प्रतिमा का जंघा से ऊपर का भाग पूरी तरह से खण्ड़ित है। दाएँ पाद को पदम पीठ पर सुशोभित एवं बाएँ पाद को जंघा से भीतर की ओर मुड़ा हुआ दिखाया गया है। शिव की खण्डित मूर्ति के बाएँ पैर की जंघा में द्वि-भुजी, कर्णकुण्डल, जटामुकुट, कण्ठाहार, मुण्डमाला, बाजूबंद, कंकण, साड़ी और नूपुर से सुशोभित उमा आसनारूढ़ हैं। उमा के महेश के साथ संयुक्त प्रतिमा होने से इसे **उमा-महेश की संयुक्त प्रतिमा** कहा जाता है। उमा की प्रतिमा का दाहिना हाथ शिव के बाएँ पाद के ऊपर अभिमंडित है तथा उमा के दूसरे हाथ में अक्षमाला सुशोभित है। प्रतिमा के नीचे पार्श्व में भग्न स्वरूप गणेश एवं कार्तिकेय विराजित हैं तथा उमा पाद के नीचे दूसरी ओर आंशिक भग्न पदमपीठ पर शिवगण नन्दी की प्रतिमा दर्शाई गई है।

चामुण्डा प्रतिमा

गर्भगृह में चामुण्डा के रौद्र रूप की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो ललितासन पर शवारूढ़ है। जिसकी लंबाई-चौड़ाई की माप 1 फीट 4" × 2 फीट 4" है। प्रतिमा की सजावट में कंठाहार, कर्णकुण्डल, मुण्डमाला, जटामुकुट, बाजूबन्द एवं नूपुर के साथ-साथ एक हाथ में कपाल को पकड़े हुए पात्र, दूसरे हाथ में खट्वांग दर्शाया गया है। इस दिव्य रूप प्रतिमा के एक हाथ में त्रिशूल सुंदरतापूर्वक

विराजमान है, सर्पफण सिर को अलंकृत कर रहा है तथा गले में मानव मुण्डों की माल शोभायमान है। इस प्रतिमा की बाईं ओर की दो भुजाऐं पूर्णतया खण्डित हो चुकी हैं। जटामुकुट के बीच में मुण्ड की सज्जा दिखाई देती है । नीचे बाईं ओर हाथ जोड़े हुए एक भक्त को दिखाया गया है। बायाँ हाथ चण्ड का केशों सहित कटा सिर पकड़े हुए है, जिसमें से टपकती रक्त की बूंदों को एक पशु द्वारा पान करते हुए दिखाया गया है। अष्टभुजी चामुण्डा का दायाँ पाद पदमपीठ पर आधारित है एवं बायाँ पाद भीतर की ओर मुड़ा हुआ दिखाया गया है।

महिषासुरमर्दिनी दुर्गा प्रतिमा

यह प्रतिमा एक विशेष धातु से निर्मित की गई है। महिषासुरमर्दिनी की यह प्रतिमा सिंहारूढ़ है, जो महिष का वध करते हुए दर्शायी गई है। प्रतिमा की लंबाई-चौड़ाई की माप 1 फीट 1" × 1 फीट 9" है। अष्टभुजी दुर्गा की इस प्रतिमा के आठ हाथों में बज्र, कपाल, बाण, खड्ग, तलवार, त्रिशूल, आदि दर्शाये गये हैं।

छाया चित्र संख्या 02 - महिषासुरमर्दिनी प्रतिमा

लकुलीश प्रतिमा

इस मंदिर में लकुलीश की ऊर्ध्वलिंगी पद्मासन में बैठे द्विभुजी प्रतिमा स्थापित की गई है, जिनके दाएँ हाथ में मातुलिंग तथा बाएँ हाथ में सर्प लिपटा हुआ है। प्रतिमा के दाहिनी बांह के चारों ओर भी इसके समान ही लकुट को लिपटा हुआ दिखाया गया है। इनके सिर के पीछे आग की लपटों के समान वलयाकार प्रभामण्डल का बिखराव दिखाया गया है। प्रतिमा की लंबाई-चौड़ाई की माप 1 फीट × 1 फीट 8" है। प्रतिमा को कुंचित केशी, लम्बे कर्ण, चौड़ा कण्ठाहार, श्रीवत्स एवं यज्ञोपवीत से सजाया गया है। इनकी प्रतिमा के दोनों ओर नीचे अनेक भक्तों के रूप में मित्र, गर्ग, कुशिक एवं कौयष्य को तथा परिकर के ऊपरी छोर पर मालाधर को सज्जित किया गया है।

चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा

इस प्राचीन मंदिर में चतुर्भुजी विष्णु की खण्डित प्रतिमा की लंबाई-चौड़ाई की माप 8" × 7" की है।

सूर्य प्रतिमा

प्राचीन मंदिर से सूर्य की द्विभुजाओं वाली प्रतिमा प्राप्त हुई है, जिनके हाथों में पद्म सुशोभित हैं। इस प्रतिमा की लंबाई-चौड़ाई क्रमशः 8" × 1 फीट 4" है। प्रतिमा के मस्तक पर शोभित मुकुट के पीछे प्रभामण्डल, कान में कुण्डल, गले में हार, वनमाला तथा अलंकृत वस्त्राभूषण से सुशोभित किया गया है।

मंदिर समूह से निकट ही शिव की विख्यात पाताल भुवनेश्वर गुफा स्थित है। इस प्राकृतिक गुफा का निर्माण चूना पत्थर से निर्मित हुई चट्टान से हुआ है। गुफा का उल्लेख स्कन्दपुराण के मानसखण्ड में हुआ है।[8] गुफा के भीतर विभिन्न प्रकार की शिलायुक्त आकृतियों से निर्मित मूर्तिस्वरूप प्रतिमाऐं असंख्य मात्रा में विद्यमान हैं। ऐसा माना जाता है कि गुफा मंदिर के भीतर तैंतीस कोटि देवताओं का निवास स्थान है। गुफा के चारों ओर गाँव में विभिन्न प्रकार के वृक्षों को लगाया गया है, जिसमें बाँज, देवदार, पय्यां, बुरांस आदि वृक्षों का बाहुल्य है।

सन्दर्भ:-

(1) अग्रवाल, डी0 पी0 - दि आर्कियोलाजी ऑफ इण्डिया, पृ0 145-146।

(2) क्रैमरिश, स्टेला - दी हिन्दू टैम्पल, भाग-1 कलकत्ता यूनिवर्सिटी, पृ0 135।

(3) चौहान, चंद्र सिंह - कुमाऊं में मंदिरों की स्थापत्य कला एवं तकनीकी, पृ0 335।

(4) कठोच, यशवन्त सिंह - मध्य हिमालय संस्कृति के पदचिन्ह, खण्ड-1, पृ0 19।

(5) प्राइस, पावेल, जे0 सी0 - 'अ हिस्ट्रीयल इण्डिया', पृ0 45।

(6) जोशी, महेश्वर प्रसाद - उत्तरान्चल के देवालयों का वास्तुशिल्प, संकलितः महेश्वर प्रसाद जोशी एवं ललितप्रभा जोशी, उत्तरान्चल हिमालय समाज, संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व, पृ0 47।

(7) क्षेत्र विशेष के लोगों द्वारा स्वयं संकलित की गई सामग्री ।

(8) एटकिन्सन, ई0 टी0 - दि हिमालयन डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, वा0 2, भाग -1, पृ0 323।